उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

श्रीमती नाजनीन बेग,

सहायक प्राध्यापिका (शिक्षा विभाग), भिलाई महिला महाविद्यालय, भिलाई (छ.ग.)

सारांश -

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। संपूर्ण राष्ट्र अपनी एक मात्र उन्नति के लिए शिक्षक या अध्यापकों पर ही दृष्टि लगाये है। आज के युग में शिक्षक तथा शिक्षण दोनों की सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान रखते है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के शैक्षिक मूल्यों की तुलना करने के लिए भिलाई एवं दुर्ग शहर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के 100 अध्यापकों के प्रतिदर्श का चयन किया गया। इनमें शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के 100 अध्यापक (50 शिक्षक एवं 50 शिक्षिकाऐं) का चयन स्तरीकृत गैर अनुपातिक यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। शिक्षकों शैक्षिक मूल्य के मापन हेतु एस.पी. अहलूवालिया और हरबंस सिंह द्वारा निर्मित शैक्षिक मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा टी मूल्य का उपयोग किया गया। एकत्रित आंकड़ों की गणना से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण करने के पश्चात् निष्कर्ष में यह पाया गया कि शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य में सार्थक अंतर नहीं है। शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य में सार्थक अंतर नहीं है। अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य में सार्थक अंतर है।

मुख्य शब्द - शैक्षिक मूल्य, शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय, अध्यापक।

प्रस्तावना -

हमेशा से ही अध्यापकों का पद समाज एवं शैक्षिक कार्यक्रमों में अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा है। आज जबकि शिक्षा बल केन्द्रित है, उसमें अध्यापकों का महत्वपूर्ण एवं उच्च स्थान है। शिक्षा का पाठ्यक्रम, निर्देशन, कार्यक्रम, छात्र आदि कितने ही अच्छे क्यों न हो, परन्तु जब तक उसमें एक अच्छे शिक्षक द्वारा प्राण नहीं फूँके नहीं जायेंगें तब तक वह शैक्षिक पद्धति सुचारू रूप से संचालित नहीं हो सकती है। संपूर्ण राष्ट्र अपनी एक मात्र उन्नति के लिए शिक्षक या अध्यापकों पर ही दृष्टि लगाये है। आज के युग में शिक्षक तथा शिक्षक या अध्यपाकों पर ही दृष्टि लगाये है।

आज के युग में शिक्षक तथा शिक्षण दोनों ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रमुख स्थान रखते है। आज वह शिक्षक, शिक्षक न पुकारा जाकर राष्ट्र निर्माता तथा नयी पीढ़ी का निर्माता कहा जाता है।

माध्यामिक शिक्षा आयोग (1952-53) "एक शिक्षक उसकी निजी विषेषतापे, शैक्षिक योग्यतायें, व्यावसायिक प्रषिक्षण तथा स्थान, जो वह समाज तथा विद्यालय में प्राप्त करता है आदि सभी शैक्षिक पुर्नरचना का प्रतिनिधित्व करती है। शिक्षक के कार्य पर ही विद्यालय की शान एवं राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है। "

शिक्षा आयोग (1964-66) "भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है तथा कक्षाओं का भाग्य निश्चित रूप से अध्यापकों के हाथों में है।"

एक सामाजिक विमर्श शिक्षा मानवजीवन हेतू ज्ञान की वह कुंजी है जो संसार के समस्त बंद दरवाजे को खोलती है। ठीक उसी प्रकार शिक्षा मानव का वह बहुमूल्य आभूषण है जिसके साथ संसार के किसी भी वस्तु से तुलना नहीं की जा सकती। शिक्षा का सीधा व सरल अर्थ सीखना- सीखना है। शैक्षिक मूल्यः– शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन अध्यापन। अतः हम यह कह सकते है कि हमारे व्यवहार को नियंत्रित करने में मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जीवन और संसार को हम जिस अर्थ के संदर्भ में समझने की चेष्टा करते है उस अर्थ को समान्य रूप से मूल्य कहा जाता है

समकालीन भारतीय समाज तीव्र संक्रमण के दौर से गुजर रहा है, परिवर्तन की आंधियों कई दिशाओं से आ रही है। एक ओर आधुनिकीकरण की अनिवार्यता है तो दूसरी परम्परा के प्रति आग्राह है। वातावरण के इस विरोधाभास में शोधकर्त्री ने शोधकार्य से पहले अपने आस-पास के वातावरण मे कई बार अवलोकन किया कि विद्यालयों में शिक्षा का स्तर लगातार गिरताजा रहा हैं। अच्छा वेतन लेने के बावजूद भी वे विद्यालयों में पूर्ण रूप से कर्तव्यनिष्ठ नहीं है, विशेषता: राजकीय विद्यालयों के शिक्षक कक्षा में शिक्षण कार्य पूर्णनिष्ठा से नहीं कर रहे है। वे अपन शैक्षिक मूल्यों को भूलते जा रहे है। इसी समस्या को देखते हुए शोधकत्री ने शिक्षकों के मूल्यों का आंकलन करते हुए उनके गिरने के स्तर तथा करणों को जानना अनिवार्य समझा।

संबंधित शोध अध्ययन -

मैती, रुबिना (2008) ने माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों ने मूल्यों एवं शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन शोधकार्य किया तथा निष्कर्ष प्राप्त किये कि शिक्षण में अधिक प्रभावशील अध्यापकों की तुलना में कम प्रभवशील अध्यापकों ने शैद्धांन्तिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया। आर्थिक मूल्यों के क्षेत्र में अधिक प्रभवशील तथा कम प्रभवशील शिक्षकों के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

कमलेश कुमार चौधरी (2009) ने "माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन" शीर्षक पर प्रयोजनात्मक शोध किया। प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी व ग्रामीण पुरुष व महिला शिक्षकों के मूल्यों की तुलना करने हेतु किया गया है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि माध्यमिक विद्यालयों की कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण शिक्षकों के धार्मिक, सामाजिक, सुखात्मक एवं शक्ति मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।

भारद्वाज, ओमऋषि (2010) ने सरकारी तथा गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों मे कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर कार्य किया। निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी अध्यापकों की तुलना में गैर सरकारी अध्यापक समाजिक मूल्यों को अपेक्षाकृत अधिक वरीयता प्रदान करते है।

समस्या कथन -

"उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन"

अध्ययन का उद्देश्य -

1. शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य का तुलना करना।
2. शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य का तुलना करना।
3. अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य का तुलना करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ -

H_{01} शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक मूल्यों के अध्ययन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_{02} शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक मूल्यों के अध्ययन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_{03} अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक मूल्यों के अध्ययन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

जनसंख्या -

प्रस्तुत शोध कार्य शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के भिलाई एवं दुर्ग शहर को अध्ययन क्षेत्र के रूप में लिया गया। भिलाई एवं दुर्ग शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् समस्त शिक्षकों जनसंख्या के अंतर्गत है।

न्यादर्श -

शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में स्तरीकृत गैर अनुपातिक यादृच्छिक विधि द्वारा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 100 शिक्षकों (50 शिक्षक एवं 50 शिक्षिकाऐं) का चयन किया गया। जिनमें 50 शिक्षक (25 शिक्षक एवं 25 शिक्षिकाए) शासकीय विद्यालय से एवं 50 शिक्षक (25 शिक्षक एवं 25 शिक्षिकाऐं) अशासकीय विद्यालय से लिए गए।

उपकरण -

शिक्षकों शैक्षिक मूल्य के मापन हेतु एस.पी. अहलूवालिया और हरबंस सिंह द्वारा निर्मित शैक्षिक मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ -

H_{01} शासकीय व अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक मूल्यों के अध्ययन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	T- मूल्य	सार्थकता स्तर
शासकीय विद्यालय के शिक्षक	50	233	32.64	0.084	0.05 स्तर पर असार्थक df = 98
अशासकीय विद्यालय के शिक्षक	50	278	32.43		
सार्थक अंतर नहीं है। परिकल्पना स्वीकृत होती है।					

व्याख्या -

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालय के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्य का मध्यमान क्रमश 233 तथा प्रमाणिक विचलन 32.64 प्राप्त हुआ। अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्य का मध्यमान क्रमश 278 तथा प्रमाणिक विचलन 32.43 प्राप्त हुआ। तथा दोनों का "टी" मूल्य 0.084 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता स्तर की कोटि क df =98 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर, तालिका के मान से छोटा है। इससे स्पष्ट होता है कि शासकीय व अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्य में सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

H_{02} शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक मूल्यों के अध्ययन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	T- मूल्य	सार्थकता स्तर
शासकीय विद्यालय के शिक्षक	25	225.33	34.57	1.75	0.05 स्तर पर असार्थक df = 48
शासकीय विद्यालय के शिक्षिकाऐं	25	240.13	33.45		
सार्थक अंतर नहीं है। परिकल्पना स्वीकृत होती है।					

व्याख्या -

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के शैक्षिक मूल्य का मध्यमान क्रमश 225.33 तथा 240.13 तथा प्रमाणिक विचलन 34.57 व 33.45 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता स्तर की कोटि क df= 48 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर "टी" का मान 1.75 प्राप्त हुआ जो कि तालिका के मान से छोटा है। इससे स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के शैक्षिक मूल्य में सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत है।

H_{03} अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक मूल्यों के अध्ययन में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तुलनात्मक समूह	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	T- मूल्य	सार्थकता स्तर
अशासकीय विद्यालय के शिक्षक	25	222.26	10.58	2.30	0.05 स्तर पर सार्थक df = 48
अशासकीय विद्यालय के शिक्षिकाऐं	25	234	46.71		
सार्थक अंतर है। परिकल्पना अस्वीकृत होती है।					

व्याख्या -

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के शैक्षिक मूल्य का मध्यमान क्रमशः 222.26 व 234 तथा प्रमाणिक विचलन 10.58 व 46.71 प्राप्त हुआ। जो कि स्वतंत्रता स्तर की कोटि क df=48 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर "टी" का मान 2.30 प्राप्त हुआ जो कि तालिका के मान से बड़ा है। इससे स्पष्ट होता है कि अशासकीय विद्यालय के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं के शैक्षिक मूल्य में सार्थक अंतर है। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत शोध अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट है कि शाधार्थी की 3 परिकल्पनाओं में से 2 परिकल्पनायें स्वीकृत हुई तथ 1 परिकल्पना अस्वीकृत हुई है, तथा परिकल्पना के अस्वीकृत का कारण निम्न है शिक्षकों की अपेक्षा शिक्षिकाओं में शैक्षिक मूल्य अधिक पायी जाती है क्योंकि शिक्षिकाओं में शैक्षिक कार्यों के प्रति लगन और आत्मविश्वास अधिक होता है वे अपने समस्त शैक्षिक कार्यों को समय में करते है साथ ही साथ उनमें किसी भी कार्य को करने की निरंतरता अधिक रहती है।

संदर्भित ग्रंथ -

कमलेश कुमार चैधरी (2009) ; शिक्षा अध्ययन पत्रिका, भो०-7, न०-1, पे०न० 34-51

भारद्वाज, ओमऋषि (2010); भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वर्ष 34, अंक 1 जनवरी जून 2010, पृ0स0.101-108।

मैती, रूबिना (2008); शिक्षा अन ुसंधान की भारतीय पत्रिका, जन-जून, 2008 न०-1, पे०सं०-16

....